सं. म्रो.वि./माई.डी./सोनीपत/201-83/57436 — मूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. हस्तनापुर मैटल प्रा० लि०, जी.टी. रोड़, कुण्डली सोनीपतं, के श्रमिक श्री रीशी राम तथा उसके प्रबन्धकों के बोच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई मौद्योगिक विवाद है;

भौर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझने हैं :

इसलिए, मब, श्रोद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा श्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 964 1-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी श्रिधसूचना सं. 3864-ए.ए.स.श्रो. (ई)-श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतव्ह, को विवादग्रस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिणय हेतु निद्घट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री रीशी राम की सेवाभों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० भो.वि./ब्राई.डी./सोनीपत/201-83/57443. चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राए है कि मैसर्ज हस्तनापुर मैटल प्रा० लि०, जी.टी. रोड़, कुण्डली सोनीपत के श्रामिक श्री जगबीर सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के वीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौषीिक विवाद हैं;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते है;

इसलिए, ग्रब, ग्रोद्यौगिक विवाद ग्रिप्तियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (I) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधसूचना सं० 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी ग्रिधसूचना सं. 3864-ए.एस.ग्रो.(ई)श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त ग्रिधिनयम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते है जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के वीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री जगबीर सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सन्धो.वि./म्राई.डी./सोनीपत/201-83/57450.—चूंकि राज्यवाल हरियाणा की राय है कि मैं. हस्तनापुर मैटल प्रा. लि., जी.टी. रोड़, कुंण्डली सोनीपत के श्रमिक श्री मिश्री लाल महतो। तथा उसके प्रयन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध कोई मौद्योगिक विवाद है;

भ्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रद, भौद्यौगिक विभाद मधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा ([) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान-की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी मधिसूचना सं० 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी मधिसूचना सं. 3864-ए.एस.ग्रों.(ई)-श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा चनत श्रधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायलय, बोहतक 'को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय होतु निर्दिष्ट करते है जो कि उनत प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उनत विवाद से मुसंगय या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री मिश्री लाख महतो की सेवाघों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार हैं ?

स. म्रो.वि./म्राई.डी./सोनीयत/2 01-83/57 457.—चूंकि राज्यपाल हरियाणा की राय है कि मै. इस्तनापुर मैटल प्रा. सि., जी.टी. रोड़, कुण्डली सोनीपत के श्रमिक श्री जय सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई मीद्योगक विवाद है; श्रीर चूं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं,

इसलिए, श्रव, श्रीद्यौगिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधसुचना सं. 9641-1 -श्रम-70/32573, दिनांक 6 नथम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी प्रधिसुचना सं 3864-ए.एस.श्रो. (ई) श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त प्रधिनयम की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहनक, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत ता सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री जय सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

स. श्रो.वि./श्राई.डी./सोनीपत/201-83/57464.--चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मै. हस्तनापुर मैटल प्राः लि., जी.टी. रोड, कुण्डली, सोनीपत, के श्रीमक श्री हरी चन्द तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रौद्योगिक दिवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय सैमझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रोद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ पिठत सरकारी श्रिधिसूचना सं 3864-ए. एस. श्रो. (ई) श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम ग्यायलय, रोहत्क को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मालां न्यायनिर्णय हेंतु निदिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के वीच या तौ विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री हरी चन्द की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किप राहन का हकदार है ?

सं. मो.वि./माई.डी./सोनीपत/201-83/57471.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैसर्ज हस्तनापुर मैटल प्रा.लि., जी.टी. रोड, कुण्डलो, सौनीपत के श्रमिक श्री यासीन खान तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद जिल्बिन माम ने में कोई मौद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते है ;

इसलिए, मब, मौद्योगिक विवाद मिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा संरकारी मिधिसूचना सं. 9641→1→श्रम-70/32573, दिनांक 6-11-1970 के साथ पठित सरकारी मिधिसूचना सं. 3864-ए.एस.मो.(ई) श्रम-70/13648 दिनांक 8-5-70 द्वारा उक्त मिधिनियम की धारा 7 के मिधीन गठित श्रम न्यायलय, रोहसक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या सो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबन्धित मामला है:—

क्या श्री यासीन खान की सेवाघों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं.मो.वि./म्राई.डी./सोनीपत/20-83/57478.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं ० हस्तनापुर मैटल प्रा.िल., जी.टी. रोड, कुण्डली, सोनीपत के श्रमिक श्री मेहर सिंह तथा उसके प्रबंधकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई प्रौद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीक्षसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6--11-1970 के साथ पठित सरकारी प्रधिसूचना सं. 38 64-ए.एस.घो. (ई) श्रम/70/13648, दिनांक 8-5-70 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवाद प्रस्त या उससे सुशंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनणय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुशंगत या संबंधित मामला है :--

क्या श्री मेहर सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० मो.वि./म्राई.डी./सोनीपत/ 201-83/ 68486. - मूं कि हरियाणा के राज्यपाल, की राय है कि मैसर्ज हस्तनापुर मैटल प्रा. लि., जी.टी. दोड, कुण्डली, सोनीपत के श्रमिक श्री जीत राम तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इशमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भोगीणक विवाद है;

भौर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बाछनीय समझते है ;

इसलिए, ग्रम, भौधोगिक विवाद ग्रीपितियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रीधसूचना सं. 9641-1-श्रम-7 0/32573, दिनांक 6-11-1970 के साथ पिठत सरकारी ग्रीधसूचना सं. 3864-ए.एस.ग्रो.(ई)श्रम-70/13648, दिनांक 8-5-70 द्वारा उक्त ग्रीपितियम की धारा 7 के ग्रीधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादपस्त या उससे सुसंगत या एससे सम्बन्धित मीचे लिखा मामना न्यायिनग्रंथ के लिए निक्टिंट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबन्धित मामला है:—

क्या श्री जीत राम की सेवाओं का समायन क्यापोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहुत का हुकदार है ?

दिनांक 31 प्रक्तूबर, 1983

ं सं. थ्रो.वि. एफ.डी. / 270-83/57653.-- क्वूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैं. एस.पी. इन्टर प्राईजिज्ञ, 65, इण्डस्ट्रीयल एरिया, एन.ग्राई.टी., फरिदाबाद के श्रीमक श्री मोहम्मद संती ग्रुमंद तथा उन्हें राश्य को के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई भोडोंगिक विवाद है ;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, श्रव, भौद्योगिक विदाद श्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यनाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उत्तन अधिनियम की धारा 7क के श्रधीन श्रोद्योगिक श्रिष्ठकरण हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट विदादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्वन्धिन मामले श्रीमक तथा प्रवन्धकों के मच्य न्यानिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री मोहम्मद सफी ग्रहमद की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. ग्रो.वि/रोहतक/194-83/57660.—-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राग है कि मै० पैक्सीकम 7 बी एम.ग्राई. ई., बहादुरगढ़, रोहतक के श्रीमक श्री विशेशवर तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिणंग हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, श्रव, श्रोद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6-11-1970 के साथ पठित सरकारी श्रिधिसूचना सं. 3864-ए.एस.श्रो. (ई) श्रम-70/13648, दिनांक 8-5-70 द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनणय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है:—

क्या श्री किशेशवर की सेवामों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?